

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

16-मई-2015 14:59 IST

**फूदान विश्वविद्यालय में गांधीवाद दर्शन केन्द्र के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ**

उपस्थित सभी महानुभाव और प्यारे विद्यार्थी मित्रों

ये मेरे लिए अत्यंत आनंद और खुशी का पल है क्योंकि मैं एक ऐसे पवित्र काम में हिस्सेदार हुआ हूँ, जिसका गौरव आने वाली सदियों तक हम महसूस करेंगे। शायद दुनिया में बहुत कम राजनेता ऐसे होंगे कि जिन्हें किसी दूसरे देश में, जब मेहमान बनकर गए हो, और तीन दिन के छोटे से कालखंड में दो Universities में जाकर के वहां की युवा पीढ़ी के साथ मिलने का अवसर मिला हो - शायद बहुत कम लोगों को ऐसा सौभाग्य मिला होगा, जो सौभाग्य आपने मुझे दिया है, मैं इसके लिए आपका आभारी हूँ।

भारत का मूल चिंतन रहा और भारत के वेदों से कहा गया कि चारों दिशाओं से ज्ञान का प्रकाश आने दो, “ज्ञान भद्रो” कहकर के हमारे यहां यह कल्पना की गई। विचार को, ज्ञान को, न पूरब होता है, न पश्चिम होता है - वो सनातन होता है और दुनिया के किसी भी भू-भाग का ज्ञान मानव संस्कृति के विकास के लिए काम आता है।

अभी China के दो विद्यार्थियों ने भारत के पुरातन शास्त्रों में से अलग-अलग श्लोकों का उल्लेख किया और उन्होंने कहा यानि भारत के मूल चिंतन को जिस प्रकार से उन्होंने प्रकट किया, “नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः” - यानि उन्होंने इस प्रकार से बात को रखा, जो मैं समझता हूँ कि दुनिया के लोगों के लिए भी वो एक ज्ञान का भंडार है। आत्मा कभी मरता नहीं, आत्मा कभी जन्मता नहीं है, आत्मा को मारा नहीं जा सकता है, आत्मा को जलाया नहीं जा सकता है। मैं समझता हूँ कि ये पूरा तत्व ज्ञान, यहां के आपके विद्यार्थियों ने आपके सामने रखा। उन्होंने गीता का भी उल्लेख किया, जिसमें कहा है “मा फलेषु कदाचिन” - यानि कर्म करते रहो लेकिन यदि फल की अपेक्षा किए बिना एक समर्पित भाव से काम करते रहो। महात्मा गांधी का अध्ययन या भारत का अध्ययन, हमारा चीन और भारत का पुराना सांस्कृतिक विरासत का अगर पुराना इतिहास देखें, तो दोनों देश ज्ञान पिपासु थे, ज्ञान पाने के लिए साहस करते थे, कष्ट उठाते थे। 1400 साल पहले वेनसांग भारत पहुंचे होंगे और भारत के विद्वत लोग चीन पहुंचे होंगे सिर्फ और सिर्फ ज्ञान के लिए, सांस्कृति को जानने के लिए, परंपराओं को जानने के लिए, कितना साहस किया जाता था। आर्थिक व्यापार के लिए दरवाजे खोलना सरल होता है। Tourism के लिए यात्रियों को निमंत्रित करना दुनिया के देशों से सरल होता है। लेकिन ज्ञान के लिए दरवाजा खोलना उसके लिए भीतर एक बहुत बड़ी ताकत लगती है। अगर भीतर बड़ी ताकत नहीं होती है, तो दूसरे विचारों का डर लगता है कहीं वो आकर हमें खा तो नहीं जाएंगे। हमारे ऊपर सवार तो नहीं हो जाएंगे? अपने आप में जब ताकत होती है तब व्यक्ति और विचारों को सुनने समझने की इच्छा करता है। और आज चीन फिर से एक बार भगवान बुद्ध के कालखंड के बाद गांधी के माध्यम से उस महान सांस्कृतिक विरासत को जानने के लिए उत्सुक हुआ है, मैं अपने आप में एक बहुत बड़ी अहम घटना मानता हूँ।

आर्थिक अधिष्ठान पर जो संबंध बनते हैं उसमें केंद्र में फायदा होता है, लाभ- अलाभ होते हैं लेकिन ज्ञान के अधिष्ठान पर बने हुए संबंधों में पीढ़ियों के जीवन के कल्याण की कामना होती है। महात्मा गांधी, भले ही हिंदुस्तान के एक कोने में उनका जन्महुआ हो, लेकिन वे विश्व मानव थे, वे युग पुरुष थे और पूरा विश्व आज जिन संकटों से जूझ रहा है, क्या गांधी उन संकटों से मुक्ति का रास्ता दिखाते हैं क्या?

आज दुनिया दो प्रमुख संकटों से गुजर रही है - एक global warming और दूसरा Terrorism. गांधी के विचारों-आचार में इन दोनों के उपाय मौजूद हैं और इस अर्थ में Gandhian study के माध्यम से इस यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी न सिर्फ चीन को, लेकिन मानवजात के माध्यम से भी संदेश देने में समर्थ होंगे कि आज भी गांधी कितने relevant हैं। China के एक गांधी प्रेमी मिस्टर जेन सेंटी 1925 में भारत में आकर के गुजरात में साबरमती आश्रम में रहे थे। महात्मा गांधी के शिष्य के रूप में रहे थे। और आश्रमवासियों को उनका नाम बोलना आता नहीं था, Chinese नाम था - जेन सेंटी - तो फिर महात्मा गांधी ने उनको नाम लिख लिया था - शांति जैन।

उसी प्रकार से चीन के एक विद्वान तांग यूंगशान वे रवींद्रनाथ टैगोर के बड़े निकट रहे थे और उन्होंने एक जगह पर लिखा

है कि महात्मा गांधी से जब वो मिले तो महात्मा गांधी ने चीन के संबंध में बहुत भरपूर तारीफ की थी।

जेन सेंटी महात्मा गांधी के साथ रहने के बाद फिर वापस आए और वापस आने के बाद उन्होंने पेनांग नाम का एक अखबार चालू किया था। और 1930 में गांधी जी इतना बड़ा आजादी का आंदोलन लड़ रहे थे, वो पूणे की यरवड़ा जेल में थे। यरवड़ा जेल के अंदर वे आमरण अनशन पर बैठे थे। और शांति जैन को पता चला यहां, वे तुरंत हिंदुस्तान आए और महात्मा गांधी को मिलने के लिए उन्होंने request की। गांधी का शांति जैन के प्रति इतना प्रेम था कि जब वो आमरण अनशन कर रहे थे यरवड़ा जेल में, तो उन्होंने किसी को भी मिलने से मना कर दिया था। लेकिन जब चीन से शांति जैन वहां पहुंचे तो उनको permission दी गांधी जी ने जेल में मिलने के लिए - इतना प्रेम एक चीनी नागरिक के प्रति महात्मा गांधी की था।

21वीं सदी एशिया की सदी है। चीन और भारत मिलकर के दुनिया की एक तिहाई जनसंख्या है। अगर यह एक-तिहाई जनसंख्या का भला होता है, वो समस्याओं से मुक्त होती है, मतलब दुनिया का एक तिहाई हिस्सा संकटों से मुक्त हो जाता है। और इसलिए चीन और भारत मिलकर के प्रगति के उंचाईयों को पार करें, जिसमें मानवीय संवेदना हो, मानवता हो, बुद्ध का चिंतन हो, गांधी के प्रयोग हों, ताकि हम विश्व को एक ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करें जो जीवन जनकल्याण से समर्पित हो।

मैं Fudan University को हृदय से अभिनंदन करता हूं कि उन्होंने इस प्रयास को आरंभ किया है, और मैं समझता हूं कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह हमारा विचार बीज भारत और चीन के संबंधों को और नई ताकत देगा। इस विश्वास के साथ, फिर एक बार मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

महिमा वशिष्ठ/ हरीश जैन, मुस्तकीम खान, तारा

पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

15-मई-2015 19:39 IST

शिनहुआ विश्वविद्यालय, बीजिंग में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूलपाठ

शिनहुआ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष श्री कियू योंग

विदेशमंत्री श्री वांग ई

शिनहुआ विश्वविद्यालय के सहायक अध्यक्ष श्री शी यीगोंग

मुझे आज शिनहुआ विश्वविद्यालय आकर अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

आपका संस्थान विश्वस्तरीय है। आप चीन के शिक्षाक्षेत्र की सफलता के प्रतीक हैं।

आप चीन के आर्थिक चमत्कार का आधार हैं। आपने राष्ट्रपति शी सहित महान नेता दिये हैं।

यह आश्चर्य का विषय नहीं है कि चीन की आर्थिक प्रगति और अनुसंधान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का नया नेतृत्व एकसाथ सामने आया।

मुझे एक चीनी कहावत खासतौर से पसंद है। यदि आप एक साल के लिये सोचते हैं, तो बीज का रोपण कीजिये। यदि आप दस साल आगे सोचते हैं, तो आप वृक्ष का रोपण कीजिये और यदि आप सौ वर्ष आगे का सोचते हैं, तो आप लोगों को शिक्षा दीजिये।

भारत में भी एक प्राचीन कहावत है: **व्यय क्रते वर्धते एव नित्यम्, विद्या धनम् सर्व धन प्रधानम्।** यानी धन देने से बढ़ता है। ज्ञान ही धन है और सभी वस्तुओं से श्रेष्ठ है।

यह एक मिसाल है कि कैसे हमारे दो प्राचीन राष्ट्र अपने कालातीत ज्ञान से एक दूसरे के साथ जुड़े हैं।

इसके अलावा भी ऐसा बहुत कुछ है जो हमारी प्राचीन सभ्यता को एक दूसरे के साथ जोड़ता है।

मैंने अपनी यात्रा की शुरुआत शियान से की। ऐसा करके मुझे चीनी बौद्ध भिक्षुक ह्वेनसांग की याद आयी।

उन्होंने सातवीं सदी में शियान से भारत की यात्रा शुरू की थी। पिछले वर्ष राष्ट्रपति शी की भारत यात्रा अहमदाबाद से शुरू हुई थी। अहमदाबाद से मेरा जन्म स्थान वडनगर अधिक दूर नहीं है लेकिन यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वडनगर ने चीन से आने वाले ह्वेन सांग सहित कई तीर्थयात्रियों का आतिथ्य किया है।

भारत और चीन के बीच विश्व का सबसे बड़ा शैक्षिक आदान-प्रदान टैंग राजवंश के समय में शुरू हुआ था।

अभिलेखों से पता चलता है कि लगभग 80 भारतीय बौद्ध भिक्षुओं ने चीन की यात्रा की और लगभग 150 चीनी बौद्ध भिक्षुओं ने भारत में शिक्षा प्राप्त की। और हां, यह 10वीं और 11वीं शताब्दी में हुआ।

चीन के साथ होने वाले कपास के व्यापार के कारण मुम्बई एक बंदरगाह और जहाज निर्माता केन्द्र के रूप में उभरा।

और, जो लोग रेशम और वस्त्रों से प्रेम करते हैं उन्हें मालूम होगा कि भारत की प्रसिद्ध तनचोई साड़ी मेरे राज्य गुजरात के तीन भाईयों की देन है, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में चीनी उस्तादों से बुनकरी की कला सीखी थी।

हमारे प्राचीन व्यापार का यह सबूत है कि रेशम को प्राचीन भाषा संस्कृत में सिनपट्ट कहते हैं।

इस तरह हमारे शताब्दियों पुराने संबंध अध्यात्म, शिक्षा, कला और व्यापार पर आधारित हैं।

यह हमारे एक दूसरे की सभ्यता और साझा समृद्धि के प्रति सम्मान का परिचायक है।

इसका सबूत भारतीय चिकित्सक डॉ. दवारिकानाथ कोटनिस के मानवीय मूल्यों में भी परिलक्षित होता है, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान चीन के फौजियों का उपचार किया था।

आज, इतिहास के कुछ कठिन और काले अध्यायों के बाद, भारत और चीन विश्व में होने वाले बड़े परिवर्तनों के अनोखे मौके के समय एक साथ खड़े हैं।

विश्व के ऐसे दो सबसे अधिक आबादी वाले राष्ट्र तेजी के साथ आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं, जिसकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलती।

पिछले तीन दशकों में चीन की कामयाबी ने पूरे विश्व के आर्थिक परिदृश्य को बदल दिया है।

भारत आर्थिक क्रांति का अब अगला मोर्चा है।

हमारी आबादी की प्रकृति भी ऐसी ही है। भारत में लगभग 800 मिलियन लोगों की आयु 35 वर्ष से कम है। उनकी आकांक्षाएं, ऊर्जा, उद्यमशीलता और कौशल भारत के आर्थिक बदलाव का बल हैं।

हमारे पास ऐसा करने का राजनीतिक जनादेश और इच्छाशक्ति है।

पिछले वर्ष के दौरान हम एक स्पष्ट और सकारात्मक दृष्टिकोण से आगे बढ़े हैं। हम पूरी गति, प्रतिबद्धता और दृढ़ इरादे से इसे कार्यान्वित कर रहे हैं।

हमने अपनी नीतियों में सुधार करने के बड़े कदम उठाये हैं और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के द्वार खोले हैं। इसमें बीमा, निर्माण, रक्षा और रेल जैसे क्षेत्र भी शामिल किए गए हैं।

हम अनावश्यक नियमों को समाप्त कर रहे हैं और प्रक्रियाओं को सरल बना रहे हैं। हम कई चरणों में स्वीकृति देने वाली प्रणाली और लंबे समय तक प्रशिक्षण करने की प्रक्रिया को डिजिटल प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से समाप्त कर रहे हैं।

हैं।

हम ऐसी कर प्रणाली बना रहे हैं जो स्थिर और प्रतिस्पर्धी होगी तथा इससे भारतीय बाजार में एकरूपता आएगी।

हम सड़क, बंदरगाह, रेल, हवाई अड्डे, दूरसंचार, डिजिटल नेटवर्क और स्वच्छ ऊर्जा जैसे अगली पीढ़ी के बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ा रहे हैं।

हमारे संसाधन पूरी तेजी और पारदर्शिता के साथ उपयोग में लाये जा रहे हैं। और, हम यह सुनिश्चित करेंगे कि भू-अधिग्रहण से विकास बाधित न हो और किसानों पर कोई बोझ न पड़े।

विश्वस्तरीय निर्माण क्षेत्र के संदर्भ में आधुनिक अर्थव्यवस्था बनाने के लिए हम विश्व कौशल का संयोजन कर रहे हैं।

हम अपने किसानों के बेहतर भविष्य और विकास को बढ़ाने के लिए अपने कृषि क्षेत्र को दोबारा जीवित कर रहे हैं।

चीन की तरह ही, शहरी नवीकरण अर्थव्यवस्था में ऊर्जा भरने के लिए आवश्यक है।

गरीबी को समाप्त करने और गरीबों को संरक्षण देने के लिए हम आधुनिक आर्थिक उपायों के साथ प्राचीन रणनीतियों का उपयोग कर रहे हैं।

हमने वित्तीय समावेश के लिए प्रमुख योजनाएं शुरू की हैं जिनमें बैंक खाता विहीनों को आर्थिक सहायता और गरीबों को सीधे लाभ पहुंचाने के प्रभावशाली कदमों को सुनिश्चित कर रहे हैं। और, हम यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि बीमा तथा पेंशन योजनाएँ निधनतम लोगों तक पहुंच सकें।

हमने समय आधारित लक्ष्य बनाया है कि आवास, पानी और स्वच्छता तक सबकी पहुंच संभव हो।

इससे न केवल जीवन बदलेगा बल्कि आर्थिक गति को बढ़ाने के लिए एक नया स्रोत भी पैदा होगा।

सबसे बढ़कर, हम अपने शासन करने के तरीके में भी बदलाव ला रहे हैं- बदलाव सिर्फ उस तरीके में नहीं जिसका इस्तेमाल हम दिल्ली में करते हैं बल्कि राज्य सरकारों, जिलों और शहरों में करते हैं।

क्योंकि हम जानते हैं कि दिल्ली में सिर्फ दृष्टि बनायी जा सकती है, लेकिन हमारी सफलता राज्य राजधानियों द्वारा तय होती है।

इसलिए मेरे साथ दो मुख्यमंत्री भी आये हैं। हमारी विदेश नीति का यह एक नया पहलू है। और, यह भारत के संदर्भ में पहली बार हो रहा है कि प्रधानमंत्री ली और मैं अपनी साझेदारी पर चर्चा करने के लिए राज्य के नेताओं और मुख्यमंत्रियों के साथ बैठेंगे।

मैं जानता हूं कि मानसिकता और कार्यसंस्कृति को बदलने से कहीं अधिक आसान नीतियों का पुनर्लेखन होता है। लेकिन, हम सही रास्ते पर चल रहे हैं।

आप भारत में बदलाव महसूस करेंगे। और, यह आप हमारी विकास दर में देखेंगे। यह बढ़कर 7.5 प्रतिशत हो गई है और हम इस बात से बहुत प्रोत्साहित हैं कि अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ एक स्वर में यह कह रहे हैं कि विकास दर और ऊंची होगी।

कई तरह से हमारे दोनों देश समान आकांक्षाओं, समान चुनौतियों और समान अवसरों को परिलक्षित करते हैं।

हम एक दूसरे की सफलता से प्रेरित हो सकते हैं।

और, हमारे समय विश्व में व्याप्त अनिश्चितता के दौरान हम एक दूसरे की प्रगति को बढ़ा सकते हैं।

शायद विश्व की कोई और अर्थव्यवस्था भारत के भविष्य में सन्निहित इस तरह के अवसर प्रदान नहीं कर सकती। और, कुछ ही साझेदारियां हमारे वायदे के अनुरूप पूरी की जा सकती हैं।

पिछले सितम्बर में राष्ट्रपति शी की यात्रा के दौरान हमने अपने योगदान का एक नया आयाम निर्धारित किया था।

भारतीय रेल के आधुनिकीकरण में साझेदारी, भारत में दो चीनी औद्योगिक पार्क, अगले पांच वर्षों में भारत में 20 अरब डालर का निवेश और "मेक इन इंडिया" अभियान में साझेदारी। यह हमारे भविष्य का स्वरूप है।

कल शंघाई में हमारे उद्योगों के बीच पहली साझेदारी संबंधी समझौता होगा।

लेकिन, इस साझेदारी को लंबे समय तक कायम रखने के लिए हमें चीनी बाजारों तक भारतीय उद्योग की पहुंच में भी सुधार करना होगा। इस समस्या को हल करने के लिए राष्ट्रपति शी और प्रधानमंत्री ली की प्रतिबद्धता से मैं प्रोत्साहित हुआ हूँ।

हमारे द्विपक्षीय योगदान की तरह ही हमारी अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी भी एक दूसरे की सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगी।

बदलते विश्व ने हमारे लिए नये अवसर और चुनौतियां पैदा की हैं।

हम दोनों को अपने पड़ोस में अस्थिरता का सामना है, जिससे हमारी सुरक्षा को खतरा है और हमारी अर्थव्यवस्था धीमी हो सकती है।

हम दोनों बढ़ते उग्रवाद और आतंकवाद का सामना कर रहे हैं। और, हमारे यहां व्याप्त इस खतरे का स्रोत एक ही क्षेत्र है।

हमें आतंकवाद के बदलते चरित्र से निपटना होगा, जिसके कारण इसका पूर्वानुमान लगाना मुश्किल हो गया है और यह पहले से अधिक विस्तृत हुआ है।

हमारी ऊर्जा की जरूरत सबसे अधिक उसी क्षेत्र से पूरी होती है जहां अस्थिरता व्याप्त है और जिसका भविष्य अनिश्चित है।

भारत और चीन अपना अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समान समुद्री मार्ग से करते हैं। दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए इन समुद्री मार्गों की सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है और इसे प्राप्त करने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग जरूरी है।

समान रूप से, हम दोनों ही विखंडित एशिया को जोड़ना चाहते हैं। कुछ ऐसी परियोजनाएं हैं जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ाएंगे। वहीं, बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार कॉरिडोर जैसी कुछ परियोजनाओं को हम संयुक्त रूप से क्रियान्वित कर रहे हैं।

लेकिन भूगोल और इतिहास हमें यह बताते हैं कि आपस में जुड़े एशिया का सपना तभी साकार हो पाएगा जब भारत और चीन मिल-जुलकर काम करेंगे।

हम दो ऐसे मुल्क हैं जिन्हें एक खुली एवं नियम आधारित वैश्विक व्यापार प्रणाली से बहुत कुछ हासिल हुआ है। अगर यह व्यवस्था भंग हो जाती है तो समान रूप से हम दोनों को ही भारी नुकसान उठाना पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन पर जारी अंतर्राष्ट्रीय वार्ताओं में हम दोनों का ही बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है। इन मंचों पर हमारा सहयोग इन वार्ताओं से निकलने वाले नतीजों को आकार देने के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा।

आज, हम एशिया के पुनरुत्थान की बातें करते हैं। यह एक ही समय में इस क्षेत्र में अनेक शक्तियों के अभ्युदय का नतीजा है।

यह महान वादों का एशिया है, लेकिन इसके साथ ही ढेर सारी अनिश्चितताएं भी हैं।

एशिया का फिर से अभ्युदय एक बहु-ध्रुवीय विश्व का मार्ग प्रशस्त कर रहा है, जिसका हम दोनों स्वागत करते हैं।

लेकिन यह समीकरणों में बदलाव का एक अप्रत्याशित एवं जटिल परिदृश्य भी है।

हम एशिया के शान्तिपूर्ण एवं स्थिर भविष्य को लेकर तभी निश्चित हो सकते हैं जब भारत और चीन आपसी सहयोग से कार्य करेंगे।

उभरता एशिया चाहता है कि वैश्विक मामलों में उसे अपनी बातें और पुरजोर दंग से रखने का अधिकार मिले। भारत और चीन दुनिया में अपनी भूमिका बढ़ाए जाने की मांग करते हैं। यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अथवा नया एशियाई ढांचागत निवेश बैंक में सुधार के रूप में हो सकता है।

लेकिन, एशिया की आवाज तभी और ज्यादा दमदार होगी एवं हमारे देश की भूमिका तभी ज्यादा प्रभावशाली होगी, जब भारत और चीन हम सभी के लिए और एक-दूसरे के लिए एक स्वर में बोलेंगे।

सरल शब्दों में कहें तो, 21वीं शताब्दी के एशियाई सदी साबित होने की संभावनाएं इस बात पर काफी हद तक निर्भर करेंगी कि भारत एवं चीन व्यक्तिगत रूप से क्या हासिल करते हैं और हम आपस में मिलजुलकर क्या-क्या करते हैं।

2.5 अरब जोड़े हाथों की एक साथ संवरती किस्मत हमारे क्षेत्र एवं मानवता दोनों के ही हित में होगी।

यही सोच में राष्ट्रपति शी और प्रधानमंत्री ली के साथ साझा करता हूं।

यही प्रेरणा हमारे रिश्तों को आगे बढ़ा रही है।

हाल के वर्षों में हमने अपनी सियासी वार्ताओं में तेजी ला दी है। हमने अपनी सीमाओं पर शांति बनाये रखी है। हमने अपने मतभेद सुलझाये हैं और इसके साथ ही हमारे आपसी सहयोग में इन्हें बाधक नहीं बनने दिया है। हमने पारस्परिक रिश्तों से जुड़े सभी क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ाया है।

अगर हम अपनी भागीदारी को और गहराई में ले जाना चाहते हैं तो हमें निश्चित तौर पर वे मुद्दे भी सुलझाने होंगे जिनकी वजह से हमारे रिश्तों में हिचकिचाहट एवं शंकाएँ, यहां तक कि अविश्वास पैदा हो जाता है।

सबसे पहले हमें सीमा विवाद को तेजी से सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

हम दोनों यह मानते हैं कि यह इतिहास की विरासत है। इसे सुलझाना भविष्य के लिए हमारी साझा जिम्मेदारी है। हमें निश्चित तौर पर नये उद्देश्य एवं संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

हमारे द्वारा चुने जाना वाला समाधान सीमा विवाद को सुलझाने से भी कहीं ज्यादा कारगर साबित होना चाहिए।

यह कुछ ऐसा होना चाहिए जिससे हमारे रिश्तों में बदलाव आये, न कि नई बाधाएँ खड़ी करें।

हम सीमा पर शांति बनाये रखने में उल्लेखनीय तौर पर सफल रहे हैं।

हमें पारस्परिक एवं समान सुरक्षा के सिद्धांत पर यह स्थिति निश्चित तौर पर आगे भी बनाये रखनी चाहिए।

हमारे समझौते, प्रोटोकॉल और सीमा व्यवस्था इसमें मददगार रही है।

लेकिन, अनिश्चितता की छाया सीमा से जुड़े संवेदनशील क्षेत्रों में सदा झलकती रहती है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों ही पक्षों को यह नहीं पता है कि इन क्षेत्रों में वास्तविक नियंत्रण रेखा कहां है।

यही कारण है कि हमने इसे स्पष्ट करने की प्रक्रिया फिर से शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। हम सीमा विवाद पर अपनी स्थिति पर प्रतिकूल असर डाले बिना ऐसा कर सकते हैं।

हमें वीजा नीतियों से लेकर सीमा पार नदियों तक के ऐसे मुद्दों का रचनात्मक हल ढूँढ़ने के बारे में सोचना चाहिए, जिनसे परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं।

कभी-कभी छोटे कदम भी एक-दूसरे के बारे में हमारे लोगों की सोच पर गहरा असर डाल सकते हैं।

हम दोनों ही अपने साझा पड़ोस में अपने संबंध बढ़ा रहे हैं। ऐसे में पारस्परिक विश्वास एवं भरोसे को मजबूती प्रदान करने के लिए रणनीतिक संवाद को और ज्यादा बढ़ाने की जरूरत है।

हमें यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि अन्य देशों के साथ हमारे रिश्ते एक-दूसरे के लिए चिंता का विषय न बन जायें और जहां तक संभव हो हमें आपस में मिल-जुलकर काम करना चाहिए, जैसा कि हमने नेपाल में आये भूकंप के दौरान किया था।

अगर पिछली शताब्दी गठबंधनों का युग था, तो यह आपसी निर्भरता का दौर है। अतः एक-दूसरे के खिलाफ गठबंधनों की वार्ताओं का कोई औचित्य नहीं है।

चाहे कुछ भी हो जाये, हम दोनों ही प्राचीन सभ्यतायें, विशाल एवं स्वतंत्र राष्ट्र हैं। हममें से कोई भी किसी की योजना का हिस्सा नहीं बन सकता।

अतः अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हमारी भागीदारी अन्य देशों की चिंताओं के बजाय हमारे दोनों देशों के हितों के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।

पुनर्गठित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता और निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं जैसे परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भारत की सदस्यता के लिए चीन की ओर से दिए जा रहे समर्थन से हमारे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में मजबूती आने से भी कहीं ज्यादा हासिल होगा।

इससे हमारे रिश्ते नये मुकाम पर पहुंच जायेंगे। इससे दुनिया में एशिया की आवाज और ज्यादा दमदार हो जायेगी।

अगर हम आपसी रिश्ते एवं विश्वास को और ज्यादा पुख्ता करने में समर्थ हो जायें तो हम एशिया को खुद के साथ-साथ शेष दुनिया से भी जोड़ने के लिए किए जा रहे आपसी प्रयासों में नई जान फूँकने में सफल हो जायेंगे।

हमारे सैनिक सीमा पर एक-दूसरे का सामना करते हैं, लेकिन हमें अपनी अनेक साझा चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने प्रतिरक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को भी और गहरा करना चाहिए।

कुल मिलाकर हमें आगे बढ़ते हुए हमारे लोगों के बीच अपनत्व एवं सुविधा के और ज्यादा पुल निश्चित तौर पर बनाने चाहिए।

विश्व की आबादी का लगभग 33 फीसदी या तो भारतीय अथवा चीनी है। हालांकि, इसके बावजूद हमारे लोग एक-दूसरे के बारे में बहुत कम जानते हैं। हमें निश्चित तौर पर प्राचीन समय के तीर्थयात्रियों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिन्होंने अज्ञानता के अंधकार का सामना करते हुए ज्ञान की तलाश की थी और हम दोनों को ही समृद्ध बनाया। अतः हमने चीन के नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक पर्यटक वीजा देने का फैसला किया है। हम 2015 के दौरान चीन में 'भारत वर्ष' मना रहे हैं। हम आज 'प्रांतीय एवं राज्य नेता फोरम' लांच कर रहे हैं।

हम आज बाद में योग-ताइची कार्यक्रम में भाग लेंगे। इसमें हमारी दोनों सभ्यताओं के एकजुट होने की झलक देखने को मिलेगी। हम फुडान विश्वविद्यालय में गांधी और भारत अध्ययन केन्द्र तथा कुनमिंग में योग कॉलेज शुरू कर रहे हैं।

भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए कैलाश मानसरोवर का दूसरा मार्ग जून में शुरू होगा, जिसके लिए मैं राष्ट्रपति श्री का धन्यवाद करता हूँ। विश्व की दो सबसे बड़ी आबादियों के बीच आपसी सम्पर्क बढ़ाने की दिशा में भारत और चीन की ओर से उठाये जाने वाले कदमों में ये प्रयास भी शामिल हैं।

इसे ही ध्यान में रखते हुए मैंने एक विश्वविद्यालय में इन बातों का जिक्र करना उचित समझा। कारण यह है कि युवाओं को ही हमारे देशों के भविष्य की विरासत और हमारे रिश्तों की जिम्मेदारी मिलेगी।

राष्ट्रपति श्री ने भारत एवं चीन के आपस में जुड़े सपनों और प्रमुख देशों के बीच नई तरह के रिश्ते का वाकपटुता से जिक्र किया है। न केवल हमारे सपने आपस में जुड़े हुए हैं, बल्कि हमारा भविष्य भी काफी गहराई से आपस में जुड़ा हुआ है। मौजूदा समय में हमारे पास विकल्प चुनने का अवसर है।

भारत एवं चीन दो ऐसी गौरवमयी सभ्यतायें और दो ऐसे महान राष्ट्र हैं जो उनकी नियति को पूरा करेंगे।

सफलता का अपना मार्ग चुनने के लिए हम दोनों के ही पास ताकत एवं इच्छा-शक्ति है।

लेकिन, हमारे पास यह प्राचीन ज्ञान भी है कि हमारी यात्रा तभी और ज्यादा सुगम होगी तथा हमारा भविष्य और ज्यादा उज्ज्वल तभी बन पायेगा, जब हम दोनों एक साथ चलेंगे, एक-दूसरे पर भरोसा रखेंगे और कदम-से-कदम मिलाकर चलेंगे।

आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके निमंत्रण के लिए धन्यवाद।

विजयलक्ष्मी कासोटिया/एम/एकेपी/आरआरएस/डीसी/एसके-2594





**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

15-जून-2015 16:04 IST

**'एजुकेशन ऑफ मुस्लिम्स' पुस्तक विमोचन के अवसर पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ**

सभी वरिष्ठ महानुभाव,

इसी सप्ताह रमज़ान का पवित्र मास प्रारंभ होने जाने रहा है। मेरी तरफ से भारत के और भारत के बाहर इस विश्व के इस परंपरा को मानने वाले सभी बंधुओं को रमज़ान की बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। और यह पवित्र त्यौहार मानव कल्याण के लिए हमें मार्गदर्शक बने, मानव कल्याण के लिए शक्तिदायक बने और हम सब सामूहिक पुरुषार्थ से मानव कल्याण के काम को और गति देते चलें। यही मेरी आप सबको शुभकामनाएं हैं।

राजपूत जी मेरे पुराने मित्र हैं तो कई बार उनसे सत्संग करने मुझे अवसर रहता है। वो एकआध छोटी चीज पकड़कर बहुत सोचते रहते हैं, फिर reference ढूँढते रहते हैं। जिस विषय पर यह किताब आज हमारे सामने है, करीब चार साल पहले गांधी नगर में बहुत लम्बी बातचीत मेरी उनके साथ हुई थी और मुझे अच्छा लगा कि था वो इस दिशा में प्रयास कर रहे हैं।

हम यह जानते हैं कि 21वीं सदी ज्ञान की सदी है। और विश्व का इतिहास कहता है कि जब-जब मानव जाति ज्ञान युग से गुजरी है तब-तब भारत ने नेतृत्व किया है। 21वीं सदी ज्ञान की सदी है तो भारत की सर्वश्रेष्ठ जिम्मेदारी भी है। और उस जिम्मेदारी को निभाने के लिए ज्ञान यह सहज हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। कभी-कभार मैं सोचता हूँ कि शायद ही दुनिया में भारत के नागरिक को जो सौभाग्य मिला है, वो सौभाग्य शायद ही दुनिया के किसी नागरिक को मिला है, जो हमें मिला है। और वो सौभाग्य यह है कि इसी भू-भाग में अपने ही जैसे लोगों के बीच रहते हुए, अपनी ही भाषा बोलने वालों के बीच रहते हुए भिन्न-भिन्न परंपराओं को समझने का अवसर, भिन्न-भिन्न पंथ, संप्रदाय, उपासनाओं को समझने का अवसर, भिन्न-भिन्न प्रकार की सोच को किस प्रकार से जीया जाता है, उसको अनुभव करने का अवसर - शायद ही दुनिया में किसी बालक को मिलता होगा, जो हमें मिलता है। और जितना खुलापन होता है, उतनी ही पहचान निकट बन जाती है।

लेकिन दुर्भाग्य है कि जब तक यह खुलापन था, जब तक यह अपनापन का माहौल था, हम बहुत शक्तिशाली थे। लेकिन जब हम छोटे-छोटे दायरों में बंध गए, अपने में सीमित हो गए और न देखना, न जानना, न समझना, न पहचानना, अपने में ही खोते गए, हमने अपने ही विकास के रास्तों के दरवाजे बंद करते चले गए। यह किताब उस दिशा में हमें एक मार्गदर्शक बनती है कि कुछ खोलो, देखो तो सही। उनको भी तो समझो, उनकी भी तो सोच देखो, वे भी कुछ सोच रहे हैं। और understanding each other यही तो हमारे लिए meeting point का सेतू बनता है। मैं समझता हूँ यह संकलित किताब उस बात के लिए परिचायक है, उपकारक है, और उसके लिए मैं सिराजूद्दीन जी का भी और राजपूत जी का भी अभिनंदन करता हूँ उन्होंने यह प्रयास किया है।

हमारे देश में किसी भी संप्रदाय की बात करो, हर सम्प्रदाय में जहां तक मैं इस भू-भाग की बात करता हूँ, और वैश्विक रूप में भी देखे तो भी, ज्ञान को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। हमारे यहां ब्रह्मसूत्र की चर्चा अगर करें तो उसमें ब्रह्म ज्योति की कल्पना की है। हमारे यहां अगर गीता के संदर्भ में देखे तो ज्ञान को "दिव्यज्योति" के रूप में प्रचलित किया गया है। अगर गुरुग्रंथ साहब को देखे तो उसमें "चांदना" की चर्चा आती है। बाइबल को देखे तो "Divine Light" की बात आती है और कुरान को देखे तो "खुदा का नूर" यह शब्द आता है। इन सभी चीजों में एक एक चीज common है - ज्ञान प्रकाश देता है, ज्ञान प्रकाशपथ देता है, ज्ञान मंजिल की ओर जाने की राह देता है। और इसलिए, हमारे यहां, हमारे शास्त्रों में इस बात को कहा गया है। और हर समाज ने इसकी उपासना की है।

मुझे याद है 1894 में, यानी हम कल्पना कर सकते हैं। अहमदाबाद में एक Mohammedan Education Seminar हुआ था और पूरे देश का हुआ था - 1894 और उसको host किया था एक उमियाशंकर लाभशंकर नाम के हिंदू ने। और मिल बैठकर चर्चा इस बात की थी कि आने वाली शताब्दियों में हमारी शिक्षा कैसी हो, परंपरा कैसी हो। और आपको आश्चर्य होगा कि उस Mohammedan Education Society को जो seminar हुआ था, उसमें एक हिंदू ने प्रस्ताव रखा था,

जिसको सर्वसम्मति से माना गया था - वो प्रस्ताव यह था कि मुस्लिम कन्याओं की शिक्षा के संबंध में हम सबकी दायित्व है पूरा करना चाहिए। 1894! यानी जागरूकता उस समय भी कितनी थी इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

कुरान में सबसे ज्यादा बार अल्लाह का नाम है। लेकिन अल्लाह के बाद पूरे कुरान में एक शब्द बार-बार आता है जो second highest में कह सकता हूँ अल्लाह के बाद - वो आता है "इल्म"। 800 बार, जैसे हमारे एक मित्र मुझे बता रहे थे 800 बार कुरान में इल्म शब्द को उपयोग है। यानी अल्लाह के बाद सबसे ज्यादा अगर किसी बात की चर्चा है तो इल्म यानी शिक्षा की है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारे यहां यह जो बातें आज हम कर रहे हैं वो कोई नई नहीं है। हमें कहा गया दुर्भाग्य है कि हम भूल गए हैं। अगर हम इन बातों को याद कर लें तो कोई नए रास्ते खोजने की जरूरत भी नहीं है। और इसलिए शिक्षा के महात्म्य का... आपमें से जो लोग गुजरात विद्यापीठ का logo देखा होगा तो बड़ा आश्चर्य होगा आपको। 1920 में महात्मा गांधी ने गुजरात विद्यापीठ को प्रारंभ किया। उस गुजरात विद्यापीठ को प्रारंभ किया है उसका जो logo बना है, उसमें एक संस्कृत वाक्य है जो बहुत प्रचलित है - "सा विद्या या विमुक्तये", लेकिन उसी के अंदर उस logo में Arabic घोष वाक्य भी है। बहुत कम लोगों का ध्यान या होगा और उस घोष वाक्य बड़ा मजेदार है। उसमें लिखा है "al hikamato zallatual monimine fahaiso uajedaha ahakko leha" इसका मतलब होता है ज्ञान मुसलमानों की खोई हुई चीज है। वो जहां से भी मिले उसको पाना यह मुसलमान का हक है। गांधी जी ने 1920 में फिर से एक बार शिक्षा की ओर चलो, फिर से एक बार ज्ञान की उपासना कि ओर आगे बढ़ो, इसकी चर्चा की थी।

हमने भी देखा है कि अलग-अलग समाज के अलग-अलग प्रकार के नेतृत्व होते हैं। कुछ समाज में ऐसे लोग पैदा होते हैं, छोटा-सा मानो समाज हो जिनको सेवा भाव में रस होता है। मुखिया होते हैं जाति बिरादरी के सेवा भाव करते हैं। तो समाज में भी उनका जय-जयकार होता है वो जीत हैं तब तक बीमार को दवाई देते हैं, भूखे को खाना देते हैं। पीने वाले को पानी देते हैं तरह-तरह के सेवा भाव करते हैं। कुछ लोग होते हैं जो समाज के अंदर राजनीतिक नेतृत्व के लिए अपनी गोटी बैठाते रहते हैं। समाज को जोड़ना वो भी राजनीति के लिए, समाज से मिलना वो भी राजनीति के लिए समाज को एकत्र योजना वो भी राजनीति पाने के लिए और खुद कुछ पाने के लिए बन जाते हैं, समाज वहीं का वहीं रह जाता है। कुछ समाज में ऐसे व्यक्ति होते हैं कि मैं तो बड़ा उद्योग लगाऊंगा और मेरे ही समाज के बच्चों को रोजी-रोटी मिलेगा तो वो काम कर लेता है और एकाध पीढ़ी का भला करके चला जाता है।

लेकिन कुछ समाज ऐसे होते हैं जिसमें एकाध दो व्यक्ति ऐसे पैदा होते हैं जो शिक्षा में अपना जीवन खपा देते हैं। और मैं कह सकता हूँ इन सब प्रकारों में जिन्होंने शिक्षा में अपना जीवन खपा दिया है वो समाज 100 साल के भीतर-भीतर इतना ओजस्वी-तेजस्वी बन जाता है उसे कभी किसी चीज की जरूरत नहीं पड़ती है। और ऐसे मैंने बहुत बारीकी से इन चीजों का अध्ययन किया है। समाजों का पिछड़ापन भी अगर गया है तो शिक्षा से गया है। परिवार का पिछड़ापन गया है तो भी शिक्षा से गया है। अंधश्रद्धा से मुक्ति मिली है तो भी शिक्षा से मिली है। कुप्रथाओं से मुक्ति मिली है तो भी शिक्षा से मिली है और इसलिए अगर हमें जीवन को समयानुकूल बनाना है, या जीवन को समय से आगे चलने वाला बनाना है तो शिक्षा के अलावा और कोई मार्ग नहीं है। और इसलिए शिक्षा के जितने भी प्रयास हों वो आवश्यक है।

मैं पिछले दिनों... यहां SAARC देशों के सभी हमारे साथी बैठे हैं, मेरी कोशिश है कि SAARC देशों में अपनापन एक-दूसरे में जानी-पहचानी बातें बहुत हैं, कोई inject पड़े ऐसा नहीं है जो व्यक्ति पाकिस्तान में बैठकर सोचता होगा, जो हिंदुस्तान में सोचता होगा, जो बांग्लादेश में सोचता होगा श्रीलंका में सोचता होगा। 19-20 का फर्क हो सकता है ज्यादा फर्क नहीं हो सकता है। क्योंकि हम एक ही ढर्रे से निकले हुए लोग हैं क्या हम SAARC देशों में शिक्षा को एक शक्ति के रूप में उभार सकते हैं? उसी विचार में से यहां पर SAARC यूनिवर्सिटी शुरू हुई है। और जब अभी हम नेपाल में बैठे थे तो मैंने आग्रह किया है कि SAARC की यूनिवर्सिटी की एक-एक ब्रांच सभी SAARC देशों में क्यों न हो? ताकि हमारे सभी pillars पर हमारी शिक्षा की व्यवस्था और SAARC यूनिवर्सिटी से जो नागरिक तैयार होगा एक प्रकार से SAARC psyche citizen बनेगा। और अगर SAARC psyche citizen बनता है तो मैं मानता हूँ हमारे अपनेपन की नई नींव बन जाता है। लंबे अरसे से इतना बड़ा प्रभाव चलता है इसकी ताकत कुछ नजर आती है। हम उस दिशा में प्रयत्नरत हैं।

अशिक्षा कितना बड़ा नुकसान करती है! कभी-कभार जब सुनते हैं कि हम पोलियो का खुराक नहीं खाएंगे। आज भारत पोलियो से मुक्त हुआ। लेकिन मुझे पीड़ा है कि मेरे पड़ोस पाकिस्तान में भी पोलियो की आज भी तकलीफ है, बंगलादेश में है, हमारे पड़ोस में है। क्या हम सभी का दायित्व नहीं है कि हमारे सब पड़ोसियों को भी पोलियो से मुक्त करें? और ये हम सबका सामुदायिक दायित्व बनता है। और भारत इस भूमिका को निभाने के लिए हर पल कोशिश कर रहा है।

हमने SAARC satellite की बात कही। SAARC satellite के पीछे इरादा क्या है? SAARC देशों में ज्ञान सहज रूप से उपलब्ध हो। SAARC satellite के माध्यम से knowledge, health care, मौसम की जानकारीयां - हमारी अपनी शक्ति हो जो हमारे अपने आप में शक्ति के रूप में उभरे। उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि अगर 21वीं सदी एशिया

की सदी है, अगर SAARC के हम देश के लोग बिखरे रहेंगे, तो हम 21वीं सदी जब हमारे दरवाजे पर खड़ी होगी, वैभव चारो तरफ दिखता होगा - लेकिन हम शायद उसको पाने के लिए भाग्यवान नहीं होंगे। और इसलिए SAARC की एकता, SAARC का सामर्थ्य SAARC की शिक्षा, SAARC का आरोग्य, SAARC का agriculture - इन सभी बातों पर बल देते हुए हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

मैं अभी बांग्लादेश गया था, मेरा इतना उत्तम अनुभव रहा कि कितने साथ मिलकर काम कर सकते हैं, हम कितने ताकत के साथ नई ऊंचाईयों को पार कर सकते हैं। देश आजाद हुआ तब से एक समस्या अटकी हुई थी - बांग्लादेश की सीमा की - देश आजाद हुआ है तब से! संसद में सभी दलों ने मिल करके उस समस्या का संविधान कर दिया। सर्वसम्मति से हो गया और मैंने देखा उसका असर बांग्लादेश के हर चेहरे पर मुझे नजर आ रहा था।

हम मिल बैठ करके हम नई ऊंचाईयों पर नई क्षेत्र में ले जाने के लिए प्रयास करना चाहें तो उसमें शिक्षा एक बहुत बड़ी ताकत है। हम कितने ही विचारों से बंधे हुए क्यों न हों लेकिन अगर हम आधुनिकता की ओर जाने से इंकार कर देंगे तो दुनिया हमारा इंतजार नहीं करेगी। हम वहीं के वहीं रह जाएंगे, जगत चलता रहेगा। जब Industrialization हुआ, औद्योगिक क्रांति हुई पूरे विश्व में, तब ये भूभाग गुलाम था। हम उसका फायदा नहीं उठा पाए। आज IT Revolution का युग है। हम स्वतंत्र हैं सामर्थ्यवान भी हैं। हम इस IT Revolution का लाभ कैसे उठाएं? ये सब ज्ञान से जुड़ी हुई बातें हैं, शिक्षा से जुड़ी हुई बातें हैं। उसको अगर हम ले करके चलते हैं तो मुझे विश्वास है कि हम एक बहुत बड़े बदलाव की ओर बहुत बड़ी सिद्धियों की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ understanding each other, उसके लिए और शिक्षा की परंपरा और शिक्षा की महात्म्य उसको जरूर एक नई दिशा देगा। आप सबसे मुझे मिलने का अवसर मिला। मैं सिराजूद्दीन जी का और राजपूत जी का आभारी हूं। मैं फिर एक बार सबको बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

महिमा वशिष्ट / हरीश जैन , तारा , सोनिका

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

23-जुलाई-2015 21:06 IST

**Speaker's Research Initiative के अंतर्गत Workshop on Sustainable Development Goals के शुभारम्भ पर  
प्रधानमंत्री जी भाषण का मूल पाठ**

सभी वरिष्ठ महानुभाव

मैं हृदय से ताई जी का अभिनन्दन करता हूँ कि आपने SRI की शुरुआत की हैं, वैसे अब पहले जैसा वक्त नहीं रहा है कि जब सांसद को किसी विषय पर बोलना हो तो ढेर सारी चीजें ढूँढ़नी पड़े, इकट्ठी करनी पड़े वो स्थिति नहीं रही है technology ने इतना बड़ा role play किया है और अगर आप भी Google गुरु के विद्यार्थी हो जाएं तो मिनटों के अंदर आपको जिन विषयों की जानकारी चाहिए, मिल जाती है। लेकिन जब जानकारियों का भरमार हो, तब कठिनाई पैदा होती है कि सूचना चुनें कौन-सी, किसे उठाएंगे हर चीज उपयोगी लगती है लेकिन कब करें, कैसे करें, priority कैसे करेंगे और इसलिए सिर्फ जानकारियों के द्वारा हम संसद में गरिमामय योगदान दे पाएंगे इसकी गारंटी नहीं है। जब तक कि हमें उसके reference मालूम न हों, कोई विषय अचानक नहीं आते हैं लम्बे अर्से से ये विषय चलते रहते हैं। राष्ट्र की अपनी एक सोच बन जाती है उन विषयों पर दलों की अपनी सोच बनती है। और वो परम्पराओं का एक बहुत बड़ा इतिहास होता है। इन सब में से तब जा करके हम अमृत पा सकते हैं जबकि इसी विषय के लिए dedicated लोगों के साथ बैठें, विचार-विमर्श करें। और तब जाकर के विचार की धार निकलती है। अब जब तक विचार की धार नहीं निकलती है, तब तक हम प्रभावी योगदान नहीं दे पाते हैं। पहले का भी समय होगा कि जब सांसद के लिए सदन में वो क्या करते थे, शायद उनके क्षेत्र को भी दूसरे चुनाव में जाते थे तब पता चलता था। एक बार चुनाव जीत गया आ गये फिर तो । आज से 25-30 साल पहले तो किसी को लगता ही नहीं था, हां ठीक है कि वो जीत कर के गए हैं और कर रहे हैं कुछ देश के लिए। आज तो ऐसा नहीं है, वो सदन में आता है लेकिन सोचता है Friday को कैसे इलाके में वापस पहुंचे। उसके मन पर एक बहुत बड़ा pressure अपने क्षेत्र का रहता है। जो शायद 25-30 साल, 40 साल पहले नहीं था। और उस pressure को उसको handle करना होता है क्योंकि कभी-कभार वहां की समस्याओं का समाधान करें या न करें लेकिन वहां होना बहुत जरूरी होता है। वहां उनकी उपस्थिति होना बहुत जरूरी होता है।

दूसरी तरफ सदन में भी अपनी बात रखते समय, समय की सीमा रहती है। राजनीतिक विषयों पर बोलना हो तो यहां बैठे हुए किसी को कोई दिक्कत नहीं होती। उनके DNA में होता है और बहुत बढ़िया ढंग से हर कोई प्रस्तुत कर सकता है। लेकिन जब विषयों पर प्रस्तुतिकरण करना होता है कुछ लोग आपने देखा होगा कि जिनका development सदन की कानूनी गतिविधि से ज्यादा रहता है। उनका इतनी mastery होती है कुछ भी होता है तुरन्त उनको पता चलता है कि सदन के नियम के विरुद्ध हो रहा है। और वे बहुत quick होते हैं। हमारे दादा बैठे हैं उनको तुरन्त ध्यान में आता है कि ये नियम के बाहर हो रहा है, ये नियम के अंतर्गत ऐसा होना चाहिए। कुछ लोगों कि ऐसी विधा विकसित होती है और वो सदन को बराबर दिशा में चलाए रखने में बहुत बड़ा role play करते हैं। और मैं मानता हूं मैं इसे बुरा नहीं मानता हूं, अच्छा और आवश्यक मानता हूं। उसी प्रकार से ज्यादातर कितना ही बड़ा issue क्यों न हो लेकिन ज्यादातर हम हमारे दल की सोच या हमारे क्षेत्र की स्थिति उसी के संदर्भ में ही उसका आंकलन करके बात को रख पाते हैं। क्योंकि रोजमर्रा का हमारा अनुभव वही है। वो भी आवश्यक है पर भारत जैसे देश का आज जो स्थान बना है, विश्व जिस रूप से भारत की तरफ देखता है तब हमारी गतिविधियां हमारे निर्णय, हमारी दिशा उसको पूरा विश्व भी बड़ी बारीकी से देखता है। हम कैसे निर्णय कर रहे हैं कि जो वैश्विक परिवेश में इसका क्या impact होने वाला है। आज हम कोई भी काम अलग-थलग रह करके अकेले रह करके नहीं कर सकते हैं। वैश्विक परिवेश में ही होना है और तब जा करके हमारे लिए बहुत आवश्यक होगा और दुनिया इतनी dynamic है अचानक एक दिन सोने का भाव गिर जाए, अचानक एक दिन Greece के अंदर तकलीफ पैदा हो जाए तो हम ये तो नहीं कह सकते कि यार वहां हुआ होगा ठीक है ऐसा नहीं रहा है, तो हमारे यहां चिन्तन में, हमारे निर्णयों में भी इसका impact आता है और इसलिए ये बहुत आवश्यक हो गया है कि हम एक बहुत बड़े दायरे में भी अपने क्षेत्र की जो आवश्यकता है दोनों को जोड़ करके संसद को एक महत्वपूर्ण माध्यम बना करके अपनी चीजों को कैसे हम कार्यान्वित करा पायें। हम जो कानून बनाएं, जो नियम बनाएं, जो दिशा-निर्देश तय करवाएं उसमें ये दो margin की आवश्यकता रहती है और तब मैं जानता हूँ कि कितना कठिन काम होता जा रहा है संसद के अंदर सांसद की बात का कितना महत्व बढ़ता जा रहा है इसका अंदाजा आ रहा है।

मैं समझता हूँ कि SRI का ये जो प्रयास है, ये प्रयास, ये बात हम मानकर चलें कि अगर हमें नींद नहीं आती है तो five star hotel का कमरा book कर करके जाने से नींद आएगी तो उसकी कोई गारंटी नहीं है। हमारे अपने साथ जुड़ा हुआ विषय है उसको हमने ही तैयार करना पड़ेगा। उसी प्रकार से ताई जी कितनी ही व्यवस्था क्यों न करें, कितने विद्वान लोगों को यहां क्यों न ले आए, कितने ही घंटे क्यों न बीतें, लेकिन जब तक हम उस मिजाज में अपने-आपको सज्ज करने के लिए अपने-आपको तैयार नहीं होंगे तो ये तो व्यवस्थाएं तो होंगी हम उससे लाभान्वित नहीं होंगे। और अगर खुले मन से हम चले जाएं अपने सारे विचार जो हैं जब उस कार्यक्रम के अंदर हिस्सा लें पल भर के लिए भूल जाएं कि मैं इस विषय को zero से शुरू करता हूँ। तो आप देखना कि हम चीजों को नए तरीके से देखना शुरू करेंगे। लेकिन हमारे पहले से बने-बनाए विचारों का सम्पुट होगा। फिर कितनी ही बारिश आए साहब हम भीगेंगे नहीं कभी। raincoat पहन करके कैसे भीग पाओगे भाई। और इसलिए खुले मन से विचारों को सुनना, विचारों को जानना और उसे समझने का प्रयास करना यही विचार की धार को पनपाता है। सिर्फ information का doze मिलता रहे इससे विचारों की धार नहीं निकलती। ये भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दूसरी बात है जिस प्रकार से विषय की बारीकी की आवश्यकता है मैं समझता हूँ कि SRI के माध्यम से उन विषयों का...जिन बातों कि चर्चा होती है उसका पिछले 50-60 साल का इतिहास क्या रहा है, हमारी संसद का या देश का? आखिरकार किस background में ये चीज आई है, दूसरा, आज ये निर्णय का वैश्विक परिवेश में क्या संदर्भ है? और तीसरा ये आवश्यक है तो क्यों है? आवश्यक नहीं है तो क्यों है? दोनों पहलू उतने ही सटीक तरीके से अगर आते हैं, तब जो सदस्य हैं, उन सदस्यों का confidence level बहुत बढ़ जायेगा। उसको लगेगा हाँ जी.. मुझे ये ये ये लाभ होने वाला है। इसके कारण मेरा ये फायदा होने वाला है। और मैं मेरे देश को ये contribute करूँगा। बोलने के लिए अच्छा material, ये संसद के काम के लिए enough नहीं है। एक अच्छे वक्ता बन सकते हैं, धारदार बोल सकते हैं, बढ़िया भाषण की तालियाँ भी बज सकती हैं, लेकिन contribution नहीं होता है।

मुझे, मेरी उत्सुकता से ही इन चीजों में थोड़ी रुचि थी। मेरे जीवन में मुझे कभी इस क्षेत्र में आना पड़ेगा ऐसा कभी सोचा न था और न ही ऐसी मेरी कोई योजना थी। संगठन के नाते राजनीति में काम करता था। लेकिन जब आजादी के 50 साल मनाये जा रहे थे, तो यहाँ तीन दिवसीय एक विशेष सत्र बुलाया गया था, तो मैं उस समय specially दिल्ली आया था। और हमारे पार्टी के सांसदों से pass निकलवा करके, मैं संसद में जा कर बैठता था। सुनने के लिए जाता था। तो करीब-करीब मैं पूरा समय बैठा था। और मन बड़ी एक जिज्ञासा थी कि देश जो लोग चलाते हैं, इनके एक-एक शब्द की कितनी ताकत होती है, कितनी पीड़ा भी होती है, कितनी अपेक्षाएं होती हैं, कितना आक्रोश होता है, ये सारी चीजें मैं उस समय अनुभव करता था। एक जिज्ञासु के रूप में आता था, एक विद्यार्थी के रूप में आता था।

आज मैं भी कल्पना कर सकता हूँ कि देश हमसे भी उसी प्रकार कि अपेक्षा करता है। उन अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए SRI के माध्यम से, वैसे श्री(SRI) अपने आप में ज्ञान का स्रोत है, तो वो उपलब्ध होता रहेगा।

मैं ताई जी को बहुत बधाई देता हूँ। और जैसा कहा... आप में से बहुत कम लोगों ने Oxford Debate के विषय में जाना होगा, Oxford Debate...उस चर्चा का वैसे बड़ा महत्व है वहां Oxford Debate की चर्चा का एक महत्व है, इस बार हमारे शशि जी वहां थे और Oxford Debate में जो बोला है, इन दिनों YouTube पर बड़ा viral हुआ है। उसमें भारत के नागरिक का जो भाव है, उसकी अभिव्यक्ति बहुत है। उसके कारण लोगों का भाव उसमें जुड़ा हुआ है। यही दिखता है कि सही जगह पर हम क्या छोड़ कर आते हैं, वो एक दम उसकी ताकत बन जाती है। मौके का भी महत्व होता है। वरना वही बात कही और जा कर कहें तो, बैठता नहीं है... उस समय हम किस प्रकार चीज को कैसे लाते हैं और वहां जो लोग हैं उस समय उसको receive करने के लिए उनका दिमाग कैसा होगा, तब जा कर वो चीज turning point बन जाती है। जिस समय लोकमान्य तिलक जी ने कहा होगा "स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" मैं नहीं मानता हूँ कि copywriter ने ऐसा sentence बना कर दिया होगा और न ही उन्होंने सोचा होगा कि मैं क्या कह रहा हूँ...भीतर से आवाज निकली होगी, जो आज भी गूंजती रहती है।

और इसलिए ये ज्ञान का सागर भी, जब हम अकेले में हों तब, अगर हमें मंथन करने के लिए मजबूर नहीं करता है, भीतर एक विचारों का तूफान नहीं चलता रहता, और निरंतर नहीं चलता रहता...अमृत बिंदू के निकलने की संभावनाएं बहुत कम होती हैं। और इसलिए ये जो ज्ञान का सागर उपलब्ध होने वाला है, उसमें से उन मोतियों को पकड़ना और मोतियों को पकड़ कर के उसको माला के रूप में पिरो कर के ले आना और फिर भारत माँ के चरणों में उन शब्दों कि माला को जोड़ना, आप देखिये कैसे भारत माता एक दम से दैदीप्यमान हो जाती हैं, इस भाव को लेकर हम चलते हैं, तो ये व्यवस्था अपने आप में उपकारक होगी।

फिर एक बार मैं ताई जी को हृदय से अभिनन्दन करता हूँ और मुझे विश्वास है कि न सिर्फ नए लोग एक और मेरा सुझाव है पुराने जो सांसद रहे हैं उनका भी कभी लाभ लेना चाहिये, दल कोई भी हो। उनका भी लाभ लेना चाहिये कि उस समय क्या था कैसे था, अब आयु बड़ी हो गयी होगी लेकिन उनके पास बहुत सारी ऐसी चीज़ें होंगी, हो सकता है कि इसमें वो क्योंकि background information बहुत बड़ा काम करती है तो उनको जोड़ना चाहिये और कभी कभार सदन के बाहर इस SRI के माध्यम से, आपके जो regular student बने हैं उनकी बात है ये उनका भी कभी वक्तव्य स्पर्धा का कार्यक्रम हो सकता है विषय पर बोलने कि स्पर्धा का काम हो सकता है और सीमित समय में, 60 मिनट में बोलना कठिन नहीं होता है लेकिन 6 मिनट बोलना काफी कठिन होता है विनोबा जी हमेशा कहते थे कि उपवास रखना मुश्किल नहीं है लेकिन संयमित भोजन करना बड़ा मुश्किल होता है वैसे ही 60 मिनट बोलना कठिन काम नहीं है लेकिन 6 मिनट बोलना मुश्किल होता है ये अगर उसका हिस्सा बने तो हो सकता है उसका बहुत बड़ा उपकार होगा। दूसरा उन को सचमुच में trained करना trained करना मतलब बहुत सी चीज़ें आती हैं, information देना, चर्चा करना, विषय को समझाना ये एक पहलू है लेकिन हमें उसको इस प्रकार से तैयार करना है तो हो सकता है कि एक प्रकार से उनकी बातों को एक बार दुबारा उनको देखने कि आदत डाली जाये कभी कभार हमें लगता है, हम भाषण दे कर के बैठते हैं तो लगता है कि वाह क्या बढ़िया बोला है लेकिन जब हम ही हमारा भाषण पढ़ते हैं एक हफ्ते के बाद तो ध्यान में आता है कि यार एक ही चीज़ को मैं कितनी बार गुनगुनाता रहता हूँ, ये फालतू में क्यों बोल रहा था, ये बेकार में टाइम खराब कर रहा था हम ही देखेंगे तो हम ही अपना भाषण 20 - 30% खुद ही काट देंगे कि यार मैं क्या बेकार में बोल रहा था बहुत कम लोगों को आदत होती है कि वो अपने आपको परीक्षित करते हैं। मैं समझता हूँ कि अगर ये आदतें लगती हैं तो बहुत सी चीज़ें हमारी एक दम तप करके बाहर निकलती हैं।

बहुत बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*

नवनीत कौर/ अमित कुमार/ हरीश जैन/ निर्मल/ विपिन

पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

07-जुलाई-2015 09:03 IST

---

नजरबायेव यूनीवर्सिटी, अस्टाना, कजाखस्तान में प्रधानमंत्री का संबोधन



प्रधानमंत्री करीम मोसीमोव,

यूनीवर्सिटी के प्रेसिडेंट श्री शिजो कात्सू,

छात्रों और गणमान्य अतिथियों,

मैं आपके बीच यहां आकर प्रसन्नता महसूस करता हूं।

माननीय प्रधानमंत्रीजी, मैं आज यहां आपकी उपस्थिति से काफी सम्मानित महसूस कर रहा हूं। आप एक विद्वान और कई प्रकार की प्रतिभाओं वाले व्यक्ति हैं। आज मुझे पता चला है कि हिन्दी और योगा में आपके कौशल भी उनमें शामिल हैं।

मध्य एशिया के सभी पांच देशों की यात्रा पर होना एक बड़ी बात है। ऐसा हो सकता है कि यह पहली बार हुआ हो।

मैं सचमुच ऐसे महान देश और महान क्षेत्र की यात्रा के लिए उत्सुक हूं जिसे मानव इतिहास का इंजन कहा गया है।

यह सौन्दर्य और सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ विशिष्ट उपलब्धियों और महान वीरता की धरती है।

यह एक ऐसा क्षेत्र भी है जो मानव सभ्यता की शुरुआत से लेकर भारत के साथ निरंतर जुड़ा रहा है।

इसलिए मैं एक पड़ोसी के रूप में इतिहास और सद्भावना के आकर्षण के साथ एक प्राचीन संबंध में एक नया अध्याय लिखने के लिए यहां आया हूं।

जैसा कि मैंने मध्य एशिया के लोगों से कहा है, आज रात मैंने नजरबायेब यूनीवर्सिटी से बेहतर स्थान चुनना जरूरी नहीं समझा है।

एक छोटे समय में यह एक विशिष्ट शिक्षा केन्द्र के रूप में उभरा है। और, इस वर्ष यहां से उत्तीर्ण होने वाले सबसे बैच को मैं बधाई देता हूं।

यह यूनीवर्सिटी राष्ट्रपति नजरबायेब के दृष्टिकोण को दर्शाता है कि शिक्षा राष्ट्र की प्रगति और नेतृत्व की आधारशिला है।

यह कजाखस्तान के महान लेखक अबай कुनानबायेव की याद दिलाता है, जिन्होंने कजाखस्तान के लोगों के लिए शिक्षा को एक ढाल और स्तम्भ माना था।

आज कजाखस्तान को एक वैश्विक दर्जे के राष्ट्र के रूप में सम्मान मिलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रकृति माता ने आपको प्रत्येक तरह के संसाधनों से उदारतापूर्वक परिपूर्ण किया है।

शिक्षा, मानवीय संसाधनों और बुनियादी सुविधाओं के क्षेत्र में आपके निवेश के फलस्वरूप ऐसा संभव हुआ है। इससे पिछले दस वर्षों में अर्थव्यवस्था को चार गुणा बढ़ाने में मदद मिली है।

शांति के लिए आपकी अगुवाई और महान यूरेशियाई क्षेत्र में सहयोग के बल पर यह संभव हुआ है।

आपके दृष्टिकोण से हमें एशिया में वार्ता के लिए सम्मेलन और विश्वास कायम करने की प्रेरणा मिली है।

कजाखस्तान संयुक्त राष्ट्र सहित अंतर्राष्ट्रीय मंचों में उत्तरदायित्व और परिपक्वता की एक आवाज है।

वर्ष 2011-12 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता के लिए भारत के प्रयासों में कजाखस्तान की उदारता को कोई भारतीय नहीं भूल सकता है। वर्ष 2017-18 में हम आपके प्रयासों के साथ पूरी एकजुटता के साथ खड़े हैं।

कजाखस्तान की तरह ही मध्य एशिया का शेष हिस्सा भी उन्नति कर रहा है। इन देशों ने मात्र दो दशक से थोड़े अधिक समय पहले स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद अपनी पहचान बनाई है।

मध्य एशिया के देशों को मानवीय और प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता से मिले हैं।

मैं यहां ताशकंद से होते हुए आ रहा हूं। उज्बेकिस्तान में आर्थिक विकास और प्रगति की गति तेज है। तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान और किर्गीस्तान अपने संसाधनों के बल पर भविष्य में बेहतर समृद्धि की ओर अग्रसर हैं।

आपने एक ऐसे समय में एक आधुनिक, समावेशी और बहुलवादी राष्ट्रों का निर्माण किये हैं, जब बहुत से क्षेत्र विवाद और उथल-पुथल में उलझे हैं।

क्षेत्र के लिए आपकी सफलता का उतना ही महत्व है जितना की विश्व के लिए।

मध्य एशिया यूरेशिया के चौराहे पर खड़ा है। यह इतिहास की धारा में फंसा है तथा इसने इसका आकार भी तय किया है।

इसने साम्राज्यों का उथान और पतन देखा है। इसने व्यापार को फूलते-फलते और गिरते हुए भी देखा है।

साधु-संतों, व्यापारियों और सम्राटों के लिए यह एक गंतव्य और मार्ग दोनों रहा है।

यह पूरे एशिया की संस्कृति और मतों का एक मध्यस्थ रहा है।

आपने मानव सभ्यता को काफी उपहार दिये हैं। मानवीय प्रगति पर आपकी अमिट छाप है।

और, पिछले दो हजार वर्षों से भी अधिक समय में भारत और मध्य एशिया ने एक-दूसरे को काफी प्रभावित किया है।

शदियों से विश्व के इस हिस्से में बौद्ध धर्म फूला-फला है और इसने भारत में बौद्ध कला को भी प्रभावित किया है। यहां से शुरू होकर यह पूरब की ओर फैला है।

इस मई में मैंने मंगोलिया स्थित गेंडन मोनास्ट्री की यात्रा की थी जो मुझे पूरे एशिया को जोड़ने वाली यात्रा लगी।

भारतीय और इस्लामिक सभ्यताओं का मिलन मध्य एशिया में हुआ। हमने ने केवल अपने अध्यात्मिक विचारों से उन्हें समृद्ध बनाया बल्कि औषधि, विज्ञान, गणित और खगोल विज्ञान से भी।

भारत और मध्य एशिया दोनों की इस्लामी विरासत इस्लाम के सर्वश्रेष्ठ आदर्श-ज्ञान, दया, अनुकम्पा और कल्याण द्वारा परिभाषित है। यह एक ऐसी विरासत है जो प्रेम और निष्ठा के सिद्धांत पर आधारित है। और, इसने हमेशा उपद्रवी तत्वों को खारिज किया है।

आज, यह एक ऐसी महत्वपूर्ण शक्ति का स्रोत है जो भारत और मध्य एशिया को एक साथ जोड़ता है।

हमारे संबंधों की मजबूती, हमारे नगरों की आकृतियों और हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न रूपों में अंकित है। हम इसे वास्तुकला और कला के साथ-साथ हस्तशिल्प और वस्त्रों तथा अधिकांश लोकप्रिय व्यंजनों में देखते हैं।

दिल्ली की दरगाहों में सूफी संगीत की ध्वनि सभी मतों के लोगों को अपनी ओर खींचती है।

पूरी दुनिया में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए एक साथ आने से काफी पहले मध्य एशिया के नगर योगा और हिन्दी के केन्द्र बन गये थे।

उज्बेकिस्तान ने हाल में हिन्दी में आकाशवाणी के प्रसारण के 50 वर्ष पूरे किये हैं। रामायण और महाभारत जैसे हमारे महाकाव्य उज्बेक टेलीविजन पर उतने लोकप्रिय हैं, जितना कि भारत में।

आपमें से बहुत से लोग नवीनतम बॉलीवुड फिल्म के रिलीज होने की उतनी ही उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं, जितना कि भारत के लोग।

यह हमारे दोनों देशों के लोगों के बीच सदभावना का स्रोत है। यह दिलों और भावनाओं के संबंधों की आधारशिला है। और, इसे केवल व्यापार अथवा राज्यों की मांगों द्वारा मापा नहीं जा सकता।

अपने राष्ट्रों की स्वतंत्रता के शीघ्र बाद राष्ट्रपति नजरबायेव और मध्य एशियाई गणराज्यों के अन्य नेताओं के भारत आने से भी यह प्रमाणित होता है।

तब से लेकर हमारे राजनीतिक संबंध मजबूत हुए हैं। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में हमारा सहयोग बढ़ रहा है।

हमारा व्यापार बढ़ रहा है, किंतु अभी भी कम है। ऊर्जा क्षेत्र में हमारा सहयोग शुरू हो गया है। बाद में आज हम भारत के निवेश से उज़्बेकिस्तान में पहले तेल कुएं की खुदाई शुरू करेंगे।

मध्य एशिया में भारतीय निवेशों का प्रवाह शुरू हो गया है। साथ ही, भारतीय पर्यटकों का आगमन भी बढ़ रहा है। मध्य एशिया की पांच राजधानियों को प्रति सप्ताह 50 से भी अधिक उड़ानें भारत के साथ जोड़ती हैं। और, इसमें उतना ही समय लगता है जितना दिल्ली से चेन्नई तक की उड़ानों में।

मानव संसाधन के विकास के क्षेत्र में हमारी काफी प्रगति हुई है। मध्य एशिया के हजारों व्यवसायिकों और छात्रों ने भारत में प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं। भारत से बहुत से लोग इस क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालयों में आए।

हमने क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विशिष्ट केन्द्र स्थापित किये हैं। और, हमें इस बात से भी प्रसन्नता है कि इस क्षेत्र में तीन भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र हैं।

इसके बावजूद भी हम सबसे पहले यह कहते हैं कि भारत और मध्य एशिया के बीच संबंध इसकी आवश्यकताओं और संभावनाओं की तुलना में कम हैं।

हमारे दिलों में एक-दूसरे के प्रति खास जगह है। किन्तु, हमने एक-दूसरे की ओर उतना ध्यान नहीं दिया है जितना देना चाहिए।

यह स्थिति बदलेगी।

यही कारण है कि मैं अपनी सरकार के शुरुआती चरणों में ही क्षेत्र के सभी पांच देशों की यात्रा कर रहा हूँ।

भारत और मध्य एशिया दोनों ही एक-दूसरे के बिना अपनी संभावना का लाभ नहीं प्राप्त कर सकते। न ही हमारे सहयोग के बिना। हमारी जनता सुरक्षित नहीं होगी और न ही हमारा क्षेत्र अधिक संतुलित हो सकेगा।

भारत कुल जनसंख्या का छठा हिस्सा है। यह 80 करोड़ युवाओं का देश है जो भारत और विश्व में प्रगति और बदलाव का एक वृहद बल है।

हमारी अर्थव्यवस्था प्रति वर्ष 7.5 प्रतिशत बढ़ रही है। हम भविष्य में और भी अधिक ऊंची विकास दर तक पहुंच सकते हैं।

भारत विश्व के लिए अवसरों का नया गंतव्य है।

मध्य एशिया व्यापक संसाधनों, प्रतिभावान लोगों, तीव्र विकास और सटीक अवस्थिति का एक बड़ा क्षेत्र है।

इसलिए, मध्य एशिया के साथ अपने संबंधों के एक नये युग की शुरुआत के लिए मैं यहां आया हूँ।

भारत समृद्धि की एक नयी साझेदारी में और भी अधिक निवेश करने के लिए तैयार है।

हम न केवल खनिज और ऊर्जा के क्षेत्र में, बल्कि औषधि, वस्त्र, अभियंत्रण और लघु तथा मध्य उद्यमों जैसे उद्योगों में भी साथ मिलकर काम करेंगे। हम यहां तेलशोधकों, पेट्रोरसायनों और उर्वरक संयंत्रों में निवेश कर सकते हैं।

हम अपने युवाओं के लिए धन और अवसरों को तैयार करने के उद्देश्य से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की मजबूती का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आज, मैं भारत के एक सुपर कम्प्यूटर के साथ अस्टाना में एक विशिष्टता केन्द्र का उद्घाटन करूंगा।

हम विकास और संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में निकट साझेदारी के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की पहुंच का इस्तेमाल कर सकते हैं।

हम कृषि और दूध उत्पादन जैसे क्षेत्रों में व्यापक अवसरों की संभावना देखते हैं। हम पारंपरिक औषधियों के क्षेत्र में अपने पुराने संबंधों में नवीनता ला सकते हैं।

मध्य एशिया भारतीय पर्यटकों के लिए एक प्राकृतिक गंतव्य है।

हम संस्कृति, शिक्षा और अनुसंधान में अपने आदान-प्रदान को बढ़ा रहे हैं और हम अपने युवाओं को और जोड़ेंगे।

इस अशांत दुनिया में, हमें अपने मूल्यों, अपने राष्ट्रों की सुरक्षा और अपने क्षेत्र की शांति की रक्षा के लिए अपने रक्षा और सुरक्षा सहयोग को भी मजबूत बनाना चाहिए। हम अस्थिरता के मुहाने पर रहते हैं। हम उग्रवाद और आतंकवाद की धार के काफी करीब रहते हैं।

हम राष्ट्रों और समूहों के द्वारा रचित आतंकवाद को देखते हैं। आज, हम यह भी देखते हैं कि अपने मंसूबों को पूरा करने के लिए नये सदस्यों को आतंकी गतिविधियों में शामिल करने हेतु साइबर सुविधाएं सीमा रहित मंच बन चुके हैं।

संघर्षों के युद्ध क्षेत्रों से लेकर के दूर के शहरों के शांत पड़ोसियों के लिए, आतंकवाद एक ऐसी वैश्विक चुनौती बन गया है जो पहले कभी नहीं थी।

यह एक ऐसी ताकत है जो अपने बदले हुए नामों, स्थानों और लक्ष्य की तुलना में अधिक व्यापक और स्थायी है।

इसलिए, हम अपने आप से पूछना चाहिए: क्या हम युवाओं की एक पीढ़ी को बंदूकों और नफरत के साये में जाने देंगे, वे अपने खोए हुए भविष्य के लिए हमें उत्तरदायी मानेंगे?

इसलिए, इस यात्रा के दौरान, हम क्षेत्र में अपने रक्षा और सुरक्षा सहयोग को मजबूत करेंगे। लेकिन, हमें अपने मूल्यों की शक्ति और मानवतावाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के द्वारा आतंकवाद का मुकाबला भी करना होगा।

यह एक उत्तरदायित्व है कि भारत और मध्य एशियाई देशों को अपनी साझा विरासत और अपने क्षेत्र के भविष्य को संवारना होगा। हमारे सम्मिलित मूल्य और आकांक्षाएं संयुक्त राष्ट्र सहित करीबी अंतराष्ट्रीय साझेदारी की भी आधारशिला हैं।

लेकिन, एक परिवर्तित दुनिया में, हम संयुक्त राष्ट्र के बढ़ते संस्थागत अपक्षरण को देखते हैं। राष्ट्रों के रूप में जो अंतराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए प्रतिबद्ध हैं, हमें इसे अपने समय अनुसार प्रासंगिक बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। जैसे ही संयुक्त राष्ट्र के 70 वर्ष पूर्ण होते हैं, तो हमें संयुक्त राष्ट्र, विशेष रूप से इसकी सुरक्षा परिषद, के सुधारों के लिए दबाव बनाना चाहिए।

शंघाई सहयोग संगठन में भारत की सदस्यता हमारी क्षेत्रीय साझेदारी को और गहरा बनाएगी।

और हम इस क्षेत्र के साथ मजबूत एकीकरण के लिए यूरोशियन आर्थिक संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर एक अध्ययन शुरू कर चुके हैं।

यह एक युग है जिसमें अंतरिक्ष और साइबर सड़कों और रेलों को कम प्रासंगिक बना रहे हैं।

लेकिन, हम व्यापार, पारगमन और ऊर्जा के लिए अपने भौतिक संपर्कों का भी फिर से निर्माण करेंगे।

अंतराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर भारत के लिए यूरोशिया हेतु एक प्रतिस्पर्धी और त्वरित मार्ग खोलता है। और, मुझे आशा है कि सारा मध्य एशिया इसमें शामिल हो जाएगा।

हमें व्यापार और पारगमन पर अश्गाबात समझौते में शामिल होने की उम्मीद है।

ईरान के चाहबहार बंदरगाह में भारत का निवेश हमें मध्य एशिया के करीब लाएगा।

मुझे यह भी उम्मीद है कि हम पाकिस्तान और अफगानिस्तान के माध्यम से मध्य एशिया के लिए परंपरागत मार्ग को फिर से प्रारंभ कर सकते हैं।

गैस पाइपलाइन पर तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत के बीच समझौते से हम आत्मविश्वास को बना सकते हैं।

यदि हम जुड़ जाते हैं तो यह क्षेत्र सबसे समृद्ध बन जाएगा।

निःसंदेह, एशियाई शताब्दी की हमारी आशाएं सच हो जाएंगी, जब हम एशिया को दक्षिण, पश्चिम, पूर्व या मध्य के रूप में न देखकर एक देखेंगे। जब हम सब एक साथ समृद्ध होंगे।

इसके लिए, हमें एशिया के विभिन्न भागों जोड़ना होगा।

भारत एशिया की भूमि और समुद्री मार्गों के चौराहे पर है। हम अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। और, हम भूमि और समुद्र के द्वारा पूर्व और पश्चिम से स्वयं को जोड़ने के लिए प्राथमिकता की भावना के साथ काम कर रहे हैं।

एशिया में स्वयं और अपने से परे दूसरों को फिर से जोड़ने में वृद्धि हुई है।

2002 में, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यहां एक नये रेशम मार्ग की पहल का आह्वान किया था। ।

आज संपूर्ण एशिया गौरवशाली प्राचीन सिल्क रोड के पुनरुद्धार की दिशा में प्रयासरत है।

लेकिन, हमें इतिहास के सबक को भी याद रखना चाहिए।

रेशम मार्ग के विकास से मध्य एशिया के भाग्य समृद्धि आएंगे।

रेशम मार्ग के अंत सिर्फ नवीन यूरोपीय शक्तियों के समुद्र आधारित व्यापार की वृद्धि से ही नहीं हुआ। यह इसलिए भी हुआ क्योंकि मध्य एशिया में क्षेत्रों के बीच एक दीर्घकालिक सेतू नहीं था, और पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण के महान शासकों के बीच सामंजस्य का ना होना भी था।

जब यह एक व्यापारिक केन्द्र नहीं था, बल्कि उच्च शक्तिशाली दीवारों की छाया से घिरी एक भूमि थी। मध्य एशियाई देशों ने इंकार कर दिया और व्यापार समाप्त हो गया।

इसके लिए, मध्य एशिया के महान राष्ट्रों को यूरेशिया में अपनी केन्द्रीय भूमिका को बढ़ाना चाहिए।

यूरोप से एशिया तक, इस क्षेत्र में सभी देशों को प्रतिस्पर्धा और बहिष्कार नहीं अपितु सहयोग और समन्वय के एक वातावरण को बढ़ावा चाहिए।

इस क्षेत्र को संघर्ष और आतंकवाद की हिंसा से मुक्त एक स्थिर और शांतिपूर्ण क्षेत्र होना चाहिए।

और जैसे मध्य एशिया से पूर्व और पश्चिम जुड़ता है उसी प्रकार इसे दक्षिण से भी जोड़ना होगा।

वैश्वीकरण के इस दौर में, एशिया खंडित नहीं रह सकता। और, मध्य एशिया भारत से दूर और अलग नहीं रह सकता।

मुझे विश्वास है हम ऐसा कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने अध्यात्मवाद, ज्ञान, और बाजारों के लिए शक्तिशाली हिमालय, काराकोरम, हिंदू कुश और पामीर को पार किया।

हम सभी 21 वीं सदी के रेशम मार्ग के निर्माण के लिए मिलकर कार्य करेंगे। हम अंतरिक्ष और साइबर के साथ-साथ भूमि और समुद्र के माध्यम से भी एक दूसरे को जोड़ेंगे।

मैं इस क्षेत्र के एक कवि अबदुराहिम ओटकुर की कुछ पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ। उन्होंने कहा:

"हमारे मार्ग रहते हैं, हमारे सपने रहते हैं, सब कुछ रहता है, फिर भी, बहुत दूर तक रहता है,

यहां तक कि यदि वायु बहती है, या रेत बिखरता है, वे कभी भी हमारे मार्गों को ढक नहीं पाते,

हालांकि हमारे अश्व बहुत कमजोर होते हैं तथापि हमारा कारवां नहीं रुकता,

चलते हुए अथवा अन्य किसी रूप में, एक दिन ये मार्ग हमारे पोत्रों के द्वारा अथवा हमारे महान पोत्रों के द्वारा ढूँढ लिए जाएंगे।"

मैं आपसे यह कहता हूँ: भारत और मध्य एशिया अपने उस वायदे को पूरा करेंगे।  
धन्यवाद।

\*\*\*

**वीएलके/एएम/एसकेएस/एसएस/एमके-3418**

